ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

मध्यकालीन हिंदी काव्य में संत साहित्य का वैशिष्टय

KEY WORDS: .

डॉ0 नीतू हिंदी प्राध्यापक, महाराजा अग्रसेन महिला विश्वविद्यालय, झज्जर (हरियाणा)

मध्यकालीन हिन्दी काव्य का भारतवर्ष की हिन्दी कविता तथा भारतवर्ष के जनमानस में विशेष महत्व है, हिन्दी का भक्तिकाल अपनी आध्यात्मिकता और सामाजिक सम्पृक्ति तथा हिन्दी का रीतिकाल अपनी श्रृंगार विशदता और कलात्मक श्रेष्ठता के कारण अति प्रशंसित और चर्चित रहा है अपनी आध्यात्मिकता तथा सामाजिक सार्थकता के ही कारण भक्तिकाल हिन्दी का स्वर्ण युग कहलाया है ।

मध्यकालीन काव्य अपनी विशालता, गम्भीरता, समृद्धता तथा कला के विभिन्न रूपों के कारण ही हर वर्ग के आलोचकों, पाठकों के अध्ययन और शोध का हेतु बना । भारतीय साहित्य के इतिहास में यह काव्य एक नहीं, वरन् अनेक उपलब्धियों के कारण अनुपम रहा है। हिन्दी साहित्य के अन्दर लगभग 600 वर्षों के इतिहास को मध्यकाल के नाम से जानते हैं । हम इस मध्यकाल को दो वर्गों में बांटते हैं।

1. पूर्व मध्यकाल या भक्तिकाल: संवत् 1375 से 1700 तक
2. उत्तर मध्यकाल या रीतिकाल: संवत् 1700 से 1900 तक

हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल अपने विचारों की गहराई, भावों के सम्प्रेषण तथा सहजाभिव्यक्ति के कारण प्रसिद्ध है । "सामान्यतः रूप से, चोदहवीं शती के मध्य से लेकर सत्रहवीं शती के मध्य तक भक्तिकाल का प्रसार माना जाता है। हिन्दी की भक्तिकालीन कविता के उद्भव के पीछे भी उस युग के परिवेशगत कारण ही रहे हैं । भक्तिकाल में दिल्ली की गद्दी एक चपल राजलक्ष्मी की भाँति थी । जिसने किसी की अधीनता अधिक समय तक स्वीकार नहीं की । इस प्रकार हिन्दी के भक्ति काव्य का आविर्भाव सत्ता की स्थिरता, अव्यवस्था, अशान्ति अवसाद, संघर्ष आदि के वातावरण में हुआ । यही वातावरण संतो और भक्तों के लिए साहित्य सर्जन हेतु प्रेरक साबित हुआ ।"1

साहित्य रचना के लिए जैसा भी वातावरण चाहिए होता है वह भी उस समय के कवियों के पास नहीं था । उस समय के ज्यादातर रचनाकारों ने धन के लोभ में अपनी काव्यप्रतिभा को शासकों के हवाले कर दिया । रीतिकाल की कविता में राजसी चमत्कार है और भक्तिकाल में साधुओं जैसी सादगी और सरलता झलकती है जो बरबस ही पाठकों को अपनी तरफ आकर्षित करती है । इतना ही नहीं संवत् 1375 से 1700 तक का समय भक्ति रस से लबालब भरा हुआ है और संवत् 1700 से 1900 तक का समय श्रृंगार रस से सराबोर है ।

भक्तिकाल और रीतिकाल का काव्य सौन्दर्य अलग-अलग दिशाओं और रूपों का वर्णन करता है । दोनों कालों की कविताएँ आपस में मिलकर एक आदर्श जीवन का निर्माण करती है । ये कविताएँ ही जीवन की हर दशाओं को अभिव्यक्त करने का सटीक माध्यम है । भक्तिकाल का दो भागों में बांटा गया है ।

1. निर्गुण मार्गी काव्यधारा
2 सगुणमार्गी काव्यधारा

निर्गुण और सगुण के बारे में ज्ञातव्य है कि इनमें तत्वों के अनुसार कोई भेद नहीं है। यह भेद तो मनुष्य के मन-मस्तिष्क में पैदा होता है कि वह किस काव्य धारा की उपासना करना चाहता है । हम मानते हैं कि ईश्वर सभी जगह विराजमान है। यह वास्तविक पारमार्थिक सत्ता निर्गुण ब्रहम ही है, फिर भी हम उपासना के लिए सगुण रूप को अनिवार्य समझते हैं ।

गोस्वामी तुलसीदास ने सगुण और निर्गुण के अभेद्तव को व्यंजित करते हुये लिखा है कि:

"अगुनहि सगुनहि नहिं कछु भेदा।
गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा।
अगुन अरूप अलख अज जोई।
भगत प्रेम बस सगुण सो होई।"2

पं0 परशुराम चतुर्वेदी ने लिखा है कि "सगुण भक्ति में जहाँ लीलावतार को आराध्य स्वीकार किया गया है वहाँ निर्गुण भक्ति में ब्रहमनुभूति को स्थान दिया है। सगुण भक्ति में जहाँ भगवदनुग्रह का भरोसा होता है, वहाँ निर्गुण में आत्मविश्वास का बल रहता है। सगुण भक्ति जहाँ बाह्य लालित्य की महिमा से मण्डित है, वहाँ निर्गुण भक्ति अन्तः सौन्दर्य की गरिमा से दीप्त।"3

निर्गुण और सगुण काव्यधाराओं के पुनः दो भाग किए गए हैं

1. सन्त काव्यधारा
2. सूफी काव्यधारा
3. कृष्ण काव्यधारा
4. राम काव्यधारा

संत काव्यधारा को ही निर्गुण काव्यधारा कहते है कबीर, दादू, नानक, रज्जब, रैदास, मलूकदास, सुन्दरदास, आदि इस काव्यधारा के श्रेष्ठ संत कवि हैं। इन्होंने अपने भगवान व उसके प्रति भक्ति को निर्गुण कहा है। इन सभी सन्तों का निर्गुण से तात्पर्य ईश्वर के सगुण रूप से इन्कार करना है, उसकी अस्वीकृति करना है। उनका ब्रहम वेदान्तियों से अलग है। इनका निर्गुण सभी गुणों से विहीन है। जबकि सन्तों का निर्गुण गुणयुक्त है। संतों के अनुसार उनका ब्रहम निर्गुण, निराकार, सर्वव्यापक और परात्पर है:-

"निर्गुण, गुनानीत, अविनाशी, दयासिन्धु, सुख सागर।"4

संत, महात्माओं की करनी व कथनी में अन्तर नहीं होता। वे जैसा कहते हैं उसी को अपने जीवन में भी उतारते हैं। जैसा वे समाज में देखते, अनुभव करते उसी को अपने काव्य के माध्यम से पाठकों के सामने व्यक्त करते हैं। सन्त सामान्य रूप से निर्गुण ब्रह्म की उपासना करते हैं, गुरू के प्रति दिव्य श्रद्धा व सामाजिक सुधार की कामना रखते हैं। वे अध्यात्म पथ के यात्री थे। अपनी इस सारग्राही चेतना को वे समाज में फैला देने के अभिलाषी थे।

हमारे भारत देश की पवित्र धरती पर बहुत से साधु-संतों, ऋषि -मुनियों, योगियों-महर्षियों ने जन्म लिया है और अपने ज्ञान से समाज को अज्ञान अधर्म एवं अंधविश्वास के गहरे अंधेरे से निकालकर एक किरण प्रदान की है। उस सदी के दौरान देश में जाति-पाति, वर्ण, पाखण्ड तथा छूत-अछूत का विशाल महल खड़ा हो गया था। जो गिराने से भी नहीं गिर रहा था।

हिन्दी साहित्यिक जगत में इस समय को मध्यकाल कहा जाता है।

इस काल के संत कवियों में कबीरदास, रैदास, सुन्दरदास मलुकदास आदि श्रेष्ठ कवि है जिनके दोहे जन साधारण को कण्ठस्थ हैं। संतों ने अपनी साखियों में सदगुरू की महिमा, राम नाम की महिमा, नाम स्मरण का महत्व, माया, विरह सांसारिक आकर्षण, प्रेम की महिमा आदि का चित्रांकन किया है। कबीरदास जी का मतंव्य है कि सदगुरू की महिमा अनन्त है। वही अज्ञानता, अंधकार को मिटाकर निर्गुण, निराकार का साक्षात्कार करवाता है।

सदगुरू का ज्ञान कृपा अमृत्य है। वही अपने शिष्यों को राम नाम का अमूल्य मंत्र देते है। वे कहते हैं कि

"राम नाम के परंतरे, देवे कौ कछु नाहिं।
क्या ले गुरू संतोषिए, हौंस रही मन मांहि।"5

कबीरदास जी की कविता गहरे जीवन अनुभवों की कविता है उन्होंने 'कागद लेखनी पर कम 'आखिन देखी' पर अधिक भरोसा किया है। लेकिन उनके काव्य में समाज, संस्कृति और साहित्य के अनेक रंगों और उनके अर्थों को भी सहज व्यंजना हुई है। इन्हीं व्यंजनाओं के कारण संतों को सामाजिक चेतना का सच्चा कवि माना है। उनका युग सामाजिक विषमताओं का युग था। उस समय लोग जाति, धर्म, धन, ऊँच, नीच आदि भेदभावों से घिरे हुए थे।

"एक बूँद एकै मल मूतर, एक चाँम एक गूदा।
एक जोति थै सब उतपना कौन बाम्हन कौन सूदा।"6

संत रविदास ने भी कुरीतियों, अंधविश्वासों के खिलाफ न केवल बिगुल बजाया, बल्कि समाज को टूटने से बचाया। संत रविदास इन भयंकर बुराइयों से बेहद दुःखी थे। संसार से इन सब को खत्म करने के लिए उन्होंने कर्णप्रिय व कालजयी रचनाओं का निर्माण किया व समाज के उद्धार व विकास के लिए समर्पित कर दिया। इन्होंने अपने वाणी, गीतों एवं उपदेशों के माध्यम से समाज में नई जाग्रति पैदा की। वे कहते हैं कि राम, कृष्ण, करीम आदि सभी नाम ईश्वर के ही हैं और वेद, कुरान, पुरान आदि सभी एक ही परमेश्वर का गुणगान करते हैं।

"कृस्न, करीम, राम, हरि, राघव,
जब लग एक न पेखा।
वेद कतेब कुरान, पुरानन,
सहज एक नहिं देखा।" 7

¬¬रविदास की वाणी भक्ति की सच्ची भावना, समाज के व्यापक हित की कामना तथा मानव प्रेम से ओत-प्रोत होती थी। इससे पाठकों व सुनने वाले पर गहरा प्रभाव पड़ता था। उनके भजनों तथा उपदेशों से लोगों को शिक्षा मिलती थी। उनकी वाणी व भजनों का इतना अधिक प्रभाव समाज पर पड़ा कि लोग उनके अनुयायी बन गए। कहा जाता है कि मीराबाई उनकी भक्ति-भावना से प्रभावित होकर ही उनकी शिष्या बन गई।

मध्यकालीन सभी संतों ने भक्ति की महिमा का गुणगान किया है। भक्ति रूपि बादल के बरसते ही भक्त का तन-मन तृप्त हो उठता है। प्रभु भक्ति ही संसार रूपी सागर को पार कराने वाली नाव है। इसके अलावा सब कुछ दुःखद एवं पीड़ादायक है।

तुलसीदास जी कहते हैं कि -
धर्म न अर्थ न काम गति, पद न चहौं निरबान।
जन्म-जन्म रति राम पद यह वरदान न आन।।

संतों के काव्य के वैराग्य भावना साफ झलकती रहती है। वेद मर्यादा के अनुसार धर्म पालन से विषय-विकारों के प्रति वैराग्य की भावना उत्पन्न होती है और वैराग्य से ज्ञान की उत्पत्ति होती है। वैराग्य की भावना के लिए संसार और मानव शरीर की नश्वरता का भाव सांसारिक विषयों के प्रति अनासक्ति, आत्मग्लानि आदि का है।

कर्मयोगी संत मलूकदास भी जाति-पाति के विरोधी थे इन्होंने मलूकपंथ को जन्म दिया। सत्संग व भ्रमण से उन्होंने जो व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया उसका मुकाबला किताबी ज्ञान नहीं कर सकता। औरंगजेब जैसा पशुवत मनुष्य भी उनके सत्संग का आदर करता था। आरम्भ में मलूकदास जी नास्तिक थे। समय बड़ा परिवर्तनशील है महात्मा, संतों की संगत के कारण वे आस्तिक बन गए।

वे कहते हैं कि -
'अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।"8

सभी संतों की वाणी में माया, अर्थ से दूर, सावधान रहने का उपदेश मिलता है। सबने माया के अस्तित्व को माना है। इनकी नजर में माया के दो रूप हैं: एक सत्य माया, जो ईश्वर प्राप्ति में सहायक है: दूसरी मिथ्या-माया जो ईश्वर से दूर करती है। उनका कहना था माया महाठगिनी हम जानी। सभी संतों ने बाहय आडम्बरों का विरोध किया है। मूर्ति पूजा, तीर्थ, रोजा नमाज हवन-यज्ञ आदि बाहरी आडम्बरों के विरूध अपनी लेखनी चलाई है और कुछ हद तक इसमें सफलता भी मिली है। कबीरदास का कथन है -

पत्थर पूजे हरि मिलै तो मैं पूजू पहार।
ताते वह चक्की भली पीस खाय संसारा।

"संत काव्य का दार्शनिक आधार कई दर्शनों का मिश्रण है। शंकराचार्य एवं उपनिषदों द्वारा प्रतिपादित अद्वैत दर्शन, नाथपंथ, सूफी धर्म एवं

इस्लाम दर्शन इन सबों की एकीकृत रूप ही संत काना का दार्शनिक आधार है। उपनिषदों में वर्णित ब्रह्म, जीव जगत एवं माया के स्वरूप को संतों ने ज्यों का त्यों ग्रहण किया है। इनका साधना पक्ष शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन की देन है। नाथ पंथ से संतों ने शून्यवाद, योग साधना, गुरू की महिमा का तत्व ग्रहण किया है। इस्लाम के प्रभाव से संतों ने एकेश्वरवाद को स्वीकार किया है। सूफी संतों से प्रेम भावना ग्रहण करने साथ-साथ दाम्पत्य प्रतीकों का प्रयोग अपनी भक्ति की अभिव्यक्ति हेतु किया। बौद्धों एवं वैष्णवों से उन्होंने अंहिसावाद को ग्रहण किया। सिद्ध सम्प्रदाय की गुढ़ उक्तियाँ, उलटबांसियाँ, वैदिक परम्पराओं एवं धार्मिक बाह्माचार का विरोध भी संत काव्य में मिलता है।''9

संतवाणी की विशेषता यही है कि सर्वत्र मानवतावाद का समर्थन करती है। कबीरदास का कथन है -

प्रेम न खेती उपजै, प्रेम न हाटि विकाई
राजा परजा जहि रूचै, सिर दो सो ले जाई।

अंत में कहा जा सकता है कि भारतीय साहित्य और विश्व साहित्य में हिन्दी की जो अस्मिता दर्ज हुई है, उसका पूरा श्रेय भक्तिकाल व मध्यकालीन हिन्दी साहित्य को ही जाता है Þ"हिंदी साहित्य का मध्यकाल कई दृष्टियों से अनुपम है। भक्ति की व्यापक प्रतिष्ठा और उसकी सामाजिक संस्कार के प्रति गहरी प्रतिबद्धता, सामाजिक संस्कार रसों भावों को सूक्ष्म अवधारणा, काव्य-शास्त्रीय चिन्तन, प्रकृति प्रणय और प्रेम की पीर का सहज-स्वाभाविक निरूपण तथा काव्य भाषा और कला कौशल की चित्रकारी मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के गौरवूपर्ण अध्याय है।''10

सन्दर्भ सूचि:

1. डॉ0 राम सजन पाण्डेयः मध्यकालीन काव्य कुज, पृ0, 4,5
2. डॉ0 रामसजन पाण्डेयः मध्यकालीन काव्य कुंज, पृ0 7
3. डॉ0 रामसजन पाण्डेयः मध्यकालीन काव्य कुंज, पृ0 9
4. डॉ0 रामसजन पाण्डेयः मध्यकालीन काव्य कुंज, पृ0 10
5. डॉ0 रामसजन पाण्डेयः मध्यकालीन काव्य कुंज, पृ0 23
6. डॉ0 रामसजन पाण्डेयः मध्यकालीन काव्य कुंज, पृ0 20
7. HTTPs://HI.M.Iwikipedia.org/wiki/ संत रविदास
8. Hindi,webdunia.com/india-religion-santmaukdas
9. vle.du.ac.in/mod/book/print.php?id=125358 chapterid=26272
10. डॉ0 रामसजन पाण्डेयः मध्यकालीन काव्य कुंज, पृ0 16